बेन्थम

(Bentham)

- उपयोगितावाद के प्रवर्तक, व्यक्तिवाद और उदारवाद के समर्थक एक उच्चकोटि के नैतिकतावादी, सुधारवादी विधिवेत्ता तथा

यथार्थवादी विचारक जरमी बेन्थम का जन्म 15 फरवरी, 1748 ई. को लन्दन में एक समृद्ध वकील घराने में हुआ था।

- बेन्थम के विचार मन्थन का परिणाम उसकी विख्यात कृति 'ए फ्रेगमेन्ट ऑन

गवर्नमेन्ट' (A Fragment on Government, 1776 ई.) में परिलक्षित होता है।

- 1789 ई. में उसने 'एन इन्ट्रोडक्शन टु द प्रिंसिपल्स ऑव् मॉरल्स एण्ड लेजिसलेशन' (An Introduction to the Principles of

Morals Legislation) नामक पुस्तक की रचना की। बेन्थम की यह कृति 'फ्रेगमेन्ट ऑन गवर्नमेन्ट' से भी जयादा प्रसिद्ध हुई। इस रचना में उसने उपयोगितावादी सिद्धान्त की व्याख्या दी है और उसेक औचित्य को

प्रमाणित करने का प्रयास किया। 1790 ई. मे बेन्थम ने 'ड्राफ्ट ऑफ ए न्यू प्लान फॉर द आर्गेनाइजेशन ऑफ द ज्यूडीशियल इस्टैबलिशमेन्ट ऑफ फ्रांस' (Draft of a New Plan for the Organisation of the Judicial establishment of France), नामक पुस्तक

प्रकाशित की। 1832 ई. में उपायोगितावाद के इस प्रबल प्रवर्तक की मृत्यु हो गई। उसकी इच्छानुसार उसके शरीर को जन्तु विज्ञान की प्रयोगशाला को दे दिया जहाँ उसे चीर कर उसके शव (Auto-Icon) को लंदन

विश्वविद्यालय में सुरक्षित रख लिया गया जो आज भी मौजूद है।

- बेन्थम की प्रमुख रचनाएँ- बेन्थम की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

- फ्रेगमेंट ऑन गवर्नमेन्ट (1776), डिफेन्स ऑव् यूस्युरी (1787), एन इन्ट्रोडक्शन टू द प्रिंसिपल्स ऑव् मॉरल्स एण्ड लेजिसलेशन (1789), एमिनसिपेट योर कॉलोनीज़

(1783), एनार्किकल फैलेजिस (1791), दी ट्रीटाइज ऑन ज्यूडीशियल एविडेन्स (1802)

बेन्थम का उपयोगितावाद : अभिप्राय

- "उपयोगिता", बेन्थम के शब्दों, "किसी वस्तु का वह गुण है जिसके द्वारा वह किसी ऐसे

पक्ष के लिए लाभ, सुविधा, सुख, अच्छाई या कल्याण का सृजन करती है अथवा ऐसे पक्ष के विरूद्ध होने वाले छल, पीड़ा, बुराई या अकल्याण को रोकने का कार्य करती है

जिसके हित के बारे में विचार किया जा रहा है।"

उपयोगिता का आधार : सुख

- बेन्थम का उपयोगितावाद सुखवाद (Hedonism) पर आधारित है। अपनी

पुस्तक 'एन इंट्रोडक्शन टू प्रिंसीपल्स ऑव् मॉरल्स एण्ड लेजिसलेशन' के प्रथम वाक्य में ही बेन्थम ने लिखा है- "प्रकृति ने मनुष्य जाति को दो सर्वोपरि स्वामियों - सुख और दु:ख के शासन मे रखा है। यह

बताना इन्हीं का काम है कि हमें क्या करना चाहिए तथा यह निश्चय करना भी इन्ही का काम है कि हम क्या करें।”

- सुख-दु:ख के स्त्रोत या शास्तियाँ

- बेन्थम के अनुसार, “सुख और दु:ख को प्रवाहित करने वाले चार भेदयोग्य स्त्रोत हैं, उन्हें भौतिक (), राजनीतिक (), नैतिक (), और धार्मिक () के रूप में पृथक् किया जा सकता है।” इन स्त्रोतों द्वारा ही सुख और

दु:ख रूपी सम्प्रभुओं की चार सत्तात्मक शास्तियों या आदेशों का निर्माण होता है जिसमें वैधानिकता की शक्तियाँ होते हैं- भौतिक शास्ति (Physical Sanction), नैतिक शास्ति (Moral Sanction), राजनीतिक

शास्ति और धार्मिक शास्ति (Religious Sanction)।

सुख एवं दु:ख की मापनीयता

- बेन्थम का यह मत है कि सुख एवं दु:ख को मापा जा सकता है और इसके लिए

उसने एक 'आनन्दमापक पद्धति' (Felicific Calculus) निर्धारित की है। अपनी पुस्तक 'प्रिंसिपल्स ऑव् मॉरल्स एण्ड लेजिसलेशन' के चतुर्थ अध्याय में बेन्थम ने व्यक्ति के

सुख या दु:ख की मात्रा को मापने के लिए सात तत्वों को प्रकट किया।

- उसने प्रारम्भ में चार तत्वों (i) तीव्रता (intensity), (ii) अवधि (duration), (iii) निश्चितता या अनिश्चितता (certainty or

uncertainty), तथा (iv) निकटता या दूरस्थता (propinquity or remoteness) का उल्लेख किया। तदोपरान्त वह स्पष्ट करता है कि यदि सुख या दु:ख के हेतु की प्रवृति (tendency) को भी सम्मिलित किया जाये

तो दो कारण और भी गिनाये जा सकते हैं- (v) उत्पादकता (Fecundity) अर्थात् एक सुख या दु:ख द्वारा अपने ही जैसा दूसरा सुख या दु:ख उत्पन्न करना और (vi) शुद्धता (Purity)। बेन्थम के अनुसार

उपर्युक्त तत्व तो व्यक्तिगत सुख और दु:ख को मापने के लिए आवश्यक है, किन्तु व्यक्ति समूह के सुख और दु:ख को मापने के लिए एक अन्य बात पर भी ध्यान देना

जरूरी है, वह है- (vii) विस्तार (Extent) अर्थात् सुख या दु:ख पाने वालों की संख्या।

सुख और दु:ख के प्रकार

- जब बेन्थम सुख और दु:ख के मूल्य निर्धारण तथा मापने का प्रयास करता है तो

उसके सामने यह कठिनाई आती है कि कुछ सुख और दु:ख ऐसे होते हैं जिन्हें न तो ठीक-ठीक सुख ही कहा जा सकता है और न ठीक-ठीक दु:ख ही कहा जा सकता है अर्थात् एक सुख के अन्दर अनेक दु:ख और

फिर एक दु:ख के अन्दर ही अनेक सुख अनुभूत हो सकते हैं।

- ऐसी स्थिति में सुख-दु:ख का गणित जटिल हो जाता है।

- **इसके बावजूद बेन्थम ने मात्रा निश्चित करने के लिए अपनी पुस्तक *प्रिंसिपल्स ऑव् मॉरेल्स एण्ड लेजिसलेशन* के पाँचवें अध्याय में सुख और दु:ख में साधारण और मिश्रित भेद करने का प्रयास किया है तथा 14 सामान्य सुख और 12 सामान्य दु:खों का उल्लेख किया।**

सुख की प्रकृति परिमाणात्मक है, गुणात्मक नहीं

- बेन्थम का मत है कि विभिन्न सुखों में भेद गुण (quality) का नहीं वरन् परिमाण (quantity) का ही होता है। उसके अनुसार

गुण की दृष्टि से विविध सुख समान होते हैं किंतु उनमें भेद परिमाण का होता है। उसके अनुसार, "सुख का परिमाण बराबर होने से पुष्किन (एक प्रकार का बच्चों का खेल) भी उतना ही श्रेष्ठ है जितना काव्य पाठ।"

राज्य के सम्बन्ध में बेन्थम के विचार

- बेन्थम राज्य की उत्पति के बारे में सामाजिक समझौता सिद्धान्त तथा सावयव सिद्धान्त को बिल्कुल नहीं मानता है। वह सामाजिक समझौताकारियों सहित

ब्लेकस्टोन के इस विचार का उग्र विरोध करता है कि मनुष्य एक आदिम सामाजिक समझौते के कारण राज्य के प्रति अपने दायित्वों और कर्त्तव्यों को पूरा करते हैं। उसका मत है कि ऐसा कोई समझौता कभी

नही हुआ था और यदि कोई ऐसा समझौता हुआ भी हो तो वर्तमान पीढ़ी को उससे बांध नहीं सकता था।

सम्प्रभुता सम्बन्धी विचार

- बेन्थम अपनी कृति 'फ्रेगमेन्ट ऑन गवर्नमेन्ट' के चतुर्थ अध्याय में राज्य की सम्प्रभुता को 'सर्वोच्च सत्ता' (Supreme Authority) के नाम से सम्बोधित करता है

और सम्प्रभुता को निरपेक्ष और अपरिमित मानता है। किन्तु राज्य की अनन्त शक्ति में वह विश्वास नहीं करता है।

अधिकार सम्बन्धी विचार

- व्यक्तिवादी या उदारवादी होकर भी बेन्थम के प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं कर सका। उसने अधिकारों से इन्कार नहीं किया किन्तु प्राकृतिक

अधिकारों को 'निरे निरर्थक' (Simple nonsence) कहकर उसकी आलोचना की। उसका विश्वास है कि सारे अधिकारों का स्त्रोत कानून है। कानून ही समय-समय पर आवश्यकता के अनुसार प्रजा-जन को

अधिकार प्रदान करता है। वे निरपेक्ष नहीं हैं और उनका आधार 'उपयोगिता' है। उसने प्राकृतिक अधिकारों को लेखन शैली की निरर्थक चातुरी भी कहा है।

सम्पत्ति सम्बन्धी विचार

- बेन्थम सम्पत्ति के अधिकार को अधिकतम सुख का साधन मानता है। उसके अनुसार कानून को सम्पत्ति के अधिकार की रक्षा करनी चाहिए। परन्तु इसका मतलब यह

नहीं की समाज में घोर आर्थिक विषमाताओं को बढ़ावा दिया जाए। अत: बेन्थम ने यह सुझाव दिया कि समानता और सुरक्षा के बीच संतुलन स्थापित होना चाहिए।

स्वतंत्रता सम्बन्धी विचार

- बेन्थम ने स्वतंत्रता जैसे प्राकृतिक अधिकारों को कोई महत्व प्रदान नहीं किया है। इसके अनुसार लोगों को संरक्षण (Security) की आवश्यकता है; स्वतंत्रता (Liberty) की नहीं।

न्याय व्यवस्था पर विचार

- बेन्थम का मानना था कि न्याय का आधारभूत सिद्धान्त अधिकतम लोगों का अधिकतम हित होना चाहिए। बेन्थम न्यायाधीशों को 'जजेज एण्ड कम्पनी'

(Judges and Co.) सम्बोधित कर उन्हें व्यापारी कहता था, उसके अनुसार, "हमारे कानून न्यायाधीशों द्वारा न्यायाधीशों के लाभ के लिए बनाये जाते हैं।"

कानूनी सम्बन्धी विचार

- बेन्थम की मान्यता है कि राज्य कोई नैतिक समुदाय नहीं है, अपितु वह एक कानून निर्माता निकाय है। कानून सम्प्रभु के आदेश हैं। सम्प्रभु की इच्छा कानून के रूप

में प्रकट होती है और इसीलिए उसकी मान्यता है। बेन्थम प्राकृतिक कानूनों को अस्वीकृत करते हुए दो प्रकार के कानूनों- ईश्वरीय तथा मानवीय- का उल्लेख करता है। कानून की परिभाषा देत हुए वह कहता

है कि “कानून सम्प्रभु की इच्छा का आदेशों की तरह अभिव्यक्तिकरण है जिससे राजनीतिक समाज का सदस्य उसका स्वाभाविक पालन करते हैं।”

- बेन्थम ने श्रेष्ठ कानून के छः लक्षण बताए हैं, जो निम्न हैं-(i) कानून जनता की आशा-आकांक्षा या विवेक बुद्धि के अनुकूल हो। (ii) कानूनों का जनता के ज्ञान, इनके लिए प्रचार, उपक्रम जनमत निर्माण आदि का

आश्रय लेना चाहिए। (iii) कानूनों में विरोधाभास नहीं हो। (iv) कानून सरल, स्पष्ट एवं सुबोध हो। (v) कानून व्यावहारिक हो। (vi) कानूनों का पूर्ण रीति

से पालन होना और कानून भंग के लिए पूर्ण दण्ड व्यवस्था होनी चाहिए।

राजदण्ड का सिद्धान्त

- दण्ड बेन्थम के अनुसार अपने आप में उपयोगी चीज नहीं है। वह एक बुराई है

क्योंकि इससे दु:ख मिलता है। किन्तु समुदायों के हितों की रक्षा के लिए इस अस्त्र का प्रयोग आवश्यक हो जाता है और जहाँ अपराधी को दु:ख देने से अधिकारिक

लोगों को सुख की उपलब्धि होती है वहाँ राजदण्ड उपयोगी भी हो जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में सुधार

- बेन्थम ने निरूपण किया उसे 'Monitorial System' नाम से जाना जाता है; जिसका

तात्पर्य था अधिक अनुभवी और पुराने विद्यार्थियों द्वारा नये प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षित करना। अपने ग्रन्थ 'Chrestomathia' में बेन्थम ने इस योजना को अधिक विस्तृत रूप दिया है जिसमें

उन्होंने नैतिकता और धार्मिकता को एक ओर रखकर केवल 'उपयोगिता' के आधार पर बौद्धिक पाठ्यक्रमों को प्रधानता दी। यह योजना 'मानव मूल्यों' को एक नया रूप देती है।

बन्दियों और बन्दीगृहों की स्थिति में सुधार

- जेलों के अन्दर सुधार के लिये बेन्थम ने एक योजना बनाई जिसे बेन्थम के द्वारा ही गढ़े शब्द 'पेनोप्टिकन' (panopticon) योजना के नाम से जाना जाता है।

सार्वभौमिक पुरूष मताधिकार की व्यवस्था

- बेन्थम का मत है कि सभी व्यस्क पुरूषों को मताधिकार मिलना चाहिए और इसके लिए शर्त केवल इतनी होनी चाहिए कि मताधिकार का प्रयोग करने वाला थोड़ा पढ़ा लिखा होना चाहिए। बेन्थम ने स्त्री मताधिकार पर जोर नहीं दिया

और उनकी समझ में अभी इंग्लैण्ड में इस अधिकार के उपयोग का समय नही आया था क्योंकि इसकी माँग बहुत थोड़े लोग कर रहे थे किन्तु उसके विरोध में एक बहुत बड़ा बहुमत था। बहुमत की उपेक्षा करके अल्पमत की माँग

के सामने इस विषय में झुकने को बेन्थम अनुपयोगी व अन्याय मानता था।

संसद का वार्षिक अधिवेशन

- बेन्थम का मत था कि ब्रिटिश पार्लियामेंट का सत्र वर्ष में एक ही बार हो तथा थोड़े समय के लिये हो। इससे सदस्यों को अधिक समय तक

अपने चुनाव क्षेत्रों में रहने तथा मतदाताओं से सम्पर्क साधने व उनकी राय जानने में कुछ मदद मिलेगी।

गुप्त मतदान

- बेन्थम गुप्त मतदान के पक्ष में थे। उस समय हाथ उठाकर चुनाव कराये जाने की प्रथा थी।

इससे मतदाता स्वतन्त्रतापूर्वक अपने मत के अधिकार प्रयोग नहीं कर पाते थे क्योंकि समाज के अनेक तत्वों व आतंकवादियों से उन्हें खुले मतदान में डर होता था और घूस आदि लेकर मत बेचने की आशंका अधिक रहती थी यद्यपि गुप्त मतदान इस दोष से मुक्त नहीं होता, जैसा

कि जे. एस. मिल ने बाद में स्थिति को स्पष्ट करते हुए इस प्रणाली का विरोध किया।

बेंथम से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य

- बेंथम को जे. एस. मिल ने प्रगतिशील दार्शनिक, मानवता का महान कल्याणकारी, यथास्थितिवाद

का शत्रु व स्थापित चीजों पर प्रश्न-चिन्ह लगाने वाला बताया है।

- जान गैटे ने बेंथम को अत्यंत गया गुजरा मूलवादी गधा (That Frightfully radical ass) बताया है।

- जे. एम. केन्स ने बेंथम के विचारों को ऐसा कीड़ा बताया जो आधुनिक सभ्यता का शरीर खाकर उसे पतित बना रहा है।
- माइकल ओकशॉट ने बेंथम को कानून का सुधारक व प्रथम महत्वपूर्ण अंग्रेज लेखक बताया किन्तु उसे प्रभावशाली विचारक मानने से

इनकार करते हैं। इमर्सन (Emerson) बेंथम के दर्शन को दुर्गन्ध (Stinking) देने वाला बताया है। शूम्पीटर के अनुसार बेंथम के विचार 'जीवन के दर्शन के संबंध में सबसे संभव छिछले' हैं।

- **मार्क्स ने बेंथम को अति दम्भी, नीरस, मोटी जीभ वाला सामान्य पूँजीवादी, बुद्धिजीवी की बुद्धि वाला कहा है।**
- **ट्रॉटस्की ने बेंथम के उपयोगितावाद को खाना बनाने की किताब (A philosophy of social Cook-book recipes) बताया है।**

- बेंथम ने *वेस्ट मिन्सटर रिव्यू* के नाम से एक पत्रिका भी प्रारम्भ की थी।
- बेंथम के उपयोगितावाद का आधार सूत्र है 'अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख।' इस शब्दावली को उसने प्रीस्टले नामक विद्वान से लिया है। बेंथम का उपयोगितावाद 16वीं सदी के

नैतिकतावाद, व्यक्तिवाद व यथार्थवाद का विचित्र मिश्रण है।

- उपयोगितावाद की आलोचना करते हुए कार्लाइल ने उसे 'सुअर दर्शन' (Pig Philosophy) का नाम दिया। कार्लाइल का आरोप है कि बेंथम ने मानव

जाति को सूअर मानकर उनकी भूख का आकलन किया है।

- मैक्सी का मत है कि बेंथम का उपयोगितादवाद व्यक्ति व समाज के हितों की खाई को ठीक तरह से नहीं पाट पाया है।

- **बेंथम के अनुसार राज्य व्यक्तियों का एक ऐसा शंकु है जो लोगों के लिए उपयोगिता को बनाए रखने व उसकी अभिवृद्धि करन के लिए संगठित किया जाता है अर्थात् हित या सुख ही वृद्धि के लिए कायम किया जाता है।**

- बेंथम प्राकृतिक कानूनों एवं अधिकारों में विश्वास नहीं करता है व राज्य द्वारा बनाए गए कानूनों को ही प्राथमिकता देता है।
- विल किमलिका का मत है कि बेन्थम का यह विचार गलत है कि मनुष्य केवल सुख चाहता है या उसे केवल सुख की इच्छा करनी चाहिए।

- सेबाइन का मत है कि बेंथम का सबसे बड़ा योगदान कानूनशास्त्र व सरकार के क्षेत्र में था। बेंथम ने स्वतंत्रता नहीं अपितु खुशी को राज्य का उद्देश्य बताया। बेंथम गुप्त मतदान व स्वतंत्र प्रेस का समर्थक था।

- बेंथम को मुक्त व्यापारियों का पिता भी कहा जाता है।
- बेंथम प्राकृतिक अधिकारों को प्रतिक्रियावादी मानता था जो सामाजिक सुधारों में विज्ञान के प्रयोग में बाधा पहुँचाते थे।

- बेंथम गुप्त राजनीतिक गतिविधियों का विरोधी भी था। बेत्रिस वेब ने बेंथम को सिडनी वेब का बौद्धिक पिता कहा है।
- हिमेलफर्ब ने बेंथम को सच्चे मायनों मे संस्थापक पिता कहा है।

- **बेंथम ने अपने सुख मापन की पद्धति को 'फेलिसिफिक केलकूलस' (Felicific Calculus) का नाम दिया है।**
- **बेंथम ने स्वयं को महारानी के चौक का भिक्षु कहा है। ब्रोनाव्स्की व मजलिश ने बेंथम के सुधारवादी योजनाओं व गाँधी जी के सुधारवादी**

दृष्टिकोण में समानता देखते हुए गाँधी जी को आधुनिक बेंथम कहा है।

- राजाराम मोहन राय के साथ बेंथम की मित्रता थी व दोनों में पत्र व्यवहार होता रहता था।

- बेंथम का कथन था कि युद्ध व तूफान लड़ने के लिए श्रेष्ठतम हो सकते हैं, पर सहन करने के लिए शांति व सुरक्षा ही श्रेष्ठतम है।
- वेपर का कथन है कि अपनी ज्ञान संबंधी विचारधारा को बेंथम ने लॉक व ह्यूम से, आनन्द व कष्ट का सिद्धांत हेल्वेटिपस से सहानुभूति व असहानुभूति का विचार ह्यूम से लिया है।